तात्पर्य

कृष्णभावनाभावित महानुभाव जाति-वर्णादि का कोई भेद नहीं मानता। यद्यपि ब्राह्मण और चाण्डाल में सामाजिक दृष्टि से भेद हो सकता है तथा श्वान, गौ, हाथी, आदि में जातिभेद है, परन्तु विद्वान् योगी की दृष्टि में ये शारीरिक भेद निरर्थक हैं। इसका कारण यह है कि परतत्त्व से उन सभी का सम्बन्ध है, क्योंकि परमेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण अपने अंशस्वरूप परमात्मा के रूप में प्राणीमात्र के हृदय में विराजमान हैं। परम सत्य का ऐसा ज्ञान ही यथार्थ ज्ञान है। जहाँ तक जीवन के विभिन्न वर्ण तथा जातियों की देहों का सम्बन्ध है, श्रीभगवान् सब पर समान रूप से अपनी कृपा करते हैं, क्योंकि वे जीवमात्र को अपना सखा मानते हैं और जीवों की परिस्थितियों की उपेक्षा करते हुए परमात्मा-रूप से सर्वव्यापक हैं। ब्राह्मण और चाण्डाल की देह में भेद है, पर परमात्मा दोनों ही में समान रूप से हैं। जीवशरीर नाना प्रकार के प्राकृतिक गुणों के कार्य हैं, परन्तु देह में स्थित जीवात्मा और परमात्मा के चिद्गुण समान हैं। चिद्गुणों के समान होने पर भी जीवात्मा तथा परमात्मा विस्तार में भिन्न हैं, क्योंकि जीवात्मा किसी एक देह में ही स्थित रहता है, जबकि परमात्मा प्रत्येक देह में विद्यमान है। कृष्णभावनाभावित पुरुष को इसका पूर्ण ज्ञान रहता है। अतएव वही यथार्थ में पण्डित तथा समदर्शी है। जीवात्मा तथा परमात्मा के गुण सजातीय हैं; दोनों ही सच्चिदानन्दमय हैं। दोनों में भेद यह है कि जीवात्मा व्यष्टि-चैतन्य है, जबकि परमात्मा समष्टि-चैतन्य हैं। अर्थात् जीवात्मा की चेतना अपने शरीर तक ही सीमित रहती है, जबकि परमात्मा को सब देहों का बोध है। परमात्मा बिना किसी भेद के सब देहों में हैं।

20/5

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः।।१९।।

इह=इस जीवन में; **एव**=ही; **तैः**=उनके द्वारा; **जितः**=जीत लिया गया है; **सर्गः**=जन्म-मृत्यु का चक्र; **येषाम्**=जिनका; **साम्ये**=समता में; **स्थितम्**=स्थित है; **मनः**=चित्त; **निर्दोषम्**=दोषरहित; **हि**=निःसन्देह; **समम्**=सम है; **ब्रह्म**=परतत्त्व; **तस्मात्**=इसलिए; **ब्रह्मणि**=परतत्त्व में; **ते**=वे; **स्थिताः**=परिनिष्ठत हैं।

अनुवाद

जिनका चित्त समता में स्थित है, उन्होंने इसी जीवन में जन्म-मृत्यु आदि बन्धनों पर विजय प्राप्त कर ली है। ब्रह्म के समान निर्दोष होने के कारण वे सदा ब्रह्म में ही स्थित हैं।।१९।।

तात्पर्य

उपरोक्त कथन के अनुसार, मन की समता स्वरूप-साक्षात्कार का लक्षण है। वास्तव में ऐसी स्थिति प्राप्त करने वाले के सम्बन्ध में यह समझना चाहिये कि वह जन्म-मृत्यु आदि सब प्राकृत बन्धनों पर विजय प्राप्त कर चुका है। जब तक जीव